विश्वकर्मा संकेत

VISHWAKRMA SANKET

भारतीय मज़दूर संघ का मुख पत्र

Vol 12 No.5 Annual Subscription Rs. 50/-, Single Copy Rs. 5/- May, 2004

स्मृति विशेषांक

मैं नहीं तू ही

तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ मातृ-भू ! तुझे अभी कुछ और भी दूं ।।

जल पड़ेंगे दीप शत्-शत् !

बुझ गया वह दीप अब है
जल रहा था जो निरंतर
ताज पहने या न पहने
राज करता जो दिलों पर, बुझ गया ....

एक व्रत लेकर जो त्यागा
स्वजन और परिवार को
काट बंधन मोह, माया
तप रहा था वह निरंतर, बुझ गया ....

स्नेह की वर्षा से जिसके
तृप्त होते थे सभी
अब बहेंगे टोप बनकर
आंसुओं में वे निरंतर, बुझ गया ....

कृष्ण सा योगी वही था
एक दृढ़ विश्वास लेकर
विजयश्री हमको मिलेगी
कह रहा था जो निरंतर, बुझ गया ....

सौम्य सीधा वह सरल था
विद्वता थी पूर्ण उसमें
सरल आचरण का धनी था
चल रहा एक पथ निरंतर, बुझ गया ....

राज करता कृष्ण था वह
साधना में भक्त वह था
भारती का सजग प्रहरी
शेष अंतिम श्वास अविचल, बुझ गया ....

दीप तू तो बुझ गया है
हो विलीन ब्रह्मांड में
किंतु तेरी प्रेरणा से
जल पड़ेंगे दीप शत्-शत्, बुझ गया ....

बैज नाथ राय

स्व० श्री राज कृष्ण भक्त

१ जून १६२१ - ३० मार्च २००४

स्व. भक्त जी के हम सभी ऋणी

- **उदय पटवर्धन**
महामंत्री भामसं.

राज कृष्ण भक्त जी भामसं. के ज्येष्ठ कार्यकर्ता अपनी आयु के ८३ वर्ष तक भामसं. के माध्यम से भारत मां की सेवा करते-२ रामनवमी के शुभ दिन पर अपने देह के पुराने वस्त्रों को त्याग कर श्री रामचरण में लीन हो गये ।

आत्मविलोपी, निरलसतापूर्ण और सादगी भरा भक्तजी का जीवन भामसं. के सभी कार्यकर्ताओं को एक आदर्श के नाते आनेवाले कई वर्षों तक मार्गदर्शक बनेगा ।

भामसं. के शुरू के कुछ दशकों में हर स्थान पर छोटे-बड़े संघर्ष सभी कार्यकर्ताओं ने किये अपनी कर्म भूमि पंजाब में ऐसे अनेक संघर्षों में जूझने के बाद भक्त जी भी प्रदेश महामंत्री बने । १९८० के बाद आप केन्द्रीय नेतृत्व की टीम में शामिल हुए । कड़ी प्रतिस्पर्धा और संघर्ष के बाद आपने भामसं. को स्थापित किया । आपके ही कुशल मार्गदर्शन में दोनों बार की हुए सदस्यता सत्यापन में भामसं. न केवल सुरक्षित रहा, अपितु प्रथम क्रमांक के श्रम संगठन बनने में सफल भी रहा ।

सफलता के बाद स्वाभाविक रूप से आनेवाले उन्माद से आप स्वयं बचे ही रहे साथ में अपने भामसं. को भी बचा लिया । आपकी विनम्रता और स्नेह के सभी प्रशंसक रहे । यहां तक कि श्रमिक क्षेत्र में सभी विचारों के संगठन आपके स्नेहपाश से बंधते हुये चले गये।

स्व. भक्त जी का जीवन श्रद्धा से सराबोर था । कुछ वर्ष पूर्व आप मुले हस्पताल, पुणे में स्वास्थ्य लाभ के लिये भर्ती हुये थे । आपरेशन के बाद मिलने गया तब मैंने बताया कि ऐसे आपरेशन के बाद एक दिन बुखार आता है, ऐसा सभी का अनुभव है । आप चिंतित न होईये ।

दूसरे दिन प्रातः फिर मिलना हुआ । भक्त जी ने बताया कि मुझे स्वयं दशमेश पिता ने आज प्रातः ही दर्शन दिये हैं अतः मुझे बुखार नहीं होगा । मैंने बाद में देखा कि वे बिल्कुल स्वास्थ रहे और उन्हें बुखार नहीं हुआ । इसी प्रकार वर्ष २००० में बैंक अधि. मैसूर से लौटते समय बंगलौर में आपकी कूल्हे की हड्डी टूट गई थी तब भी ईश्वरीय सत्ता पर अगाध श्रद्धा बल पर आप ८० वर्ष की अवस्था में भी कुछ दिनों बाद चलने फिरने लगे थे, यह हम सभी जानते है । भक्त जी सभी से कहा करते थे 'जो हो रहा है, प्रभु की इच्छा से हो रहा है । मैं तो केवल साधन हूं, करवाने वाला वही है' । इसी स्मर्पण भाव से जीवन के उतार-चढ़ाव में वे अपने को संतुलित रख सके ।

छोटे-बड़े सभी कार्यकर्ताओं की बात सुनके उसमें अपने अनुभव के आधार पर संतुलित प्रतिक्रया वे देते रहे । असहमति हो तो वह भी विनम्रता से बताते थे ऐसा । आपने अपना स्वभाव बनाया था । विविध विचारों के कार्यकर्ताओं को एक सुत्र से बांधने वाले और जोड़ने वाले आप एक विशाल पुल बने हुए थे ।

जीवन के चारों आश्रम एवं चारों पुरूषार्थों को पूरा करते-करते समाज रूपी परमेश्वर की आपने अंतिम श्वास तक आराधना की है ।

घर संसार परिवार छोड़कर सन्यस्त जीवन में अपने व्यक्तित्व को पूरी तरह मिटाकर मां भारती की सेवा में आप लगे रहे । सभी पुरूष असामान्य हैं और वंदनीय हैं । किंतु यह सन्यस्त धर्म प्रत्येक गृहस्थ धर्मी व्यक्ति के व्यवहारिक जीवन के प्रयोग का मार्ग नही बन सकता ।

यह कर्ममार्ग है और अति कठिन है किंतु साधारण श्रमिक के जीवन पथ को घड़ने के बाद उससे समाज समर्पित सेवक की मूर्ति निर्माण करने का सहज साध्य भक्तिमार्ग भक्त जी ने भामसं. के लाखों सदस्यों के सम्मुख आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है ।

अपने अथक और दीर्घ परिश्रम से प्रभू समर्पित भक्त जी ने अपने कर्म की पुष्पलता को आकाश के शिखर तक फैला दिया है जिसपर अभी हजारों फूल खिल उठे हैं । जितने बटोर लो उतने और फूल खिलेंगे ।

संत ज्ञान देव ने अनुसार मानव जीवन की सार्थकता की अभिव्यक्ति इस पुष्पलता पर भक्त जी के निज देह-दान को चमकते अन्तिम पुष्य के रूप में हम निहार सकते हैं । इस सार्थक व्यक्तित्व की संपूर्णता को केवल शतशः वंदन ही किया जा सकता है ।

ॐ शांतिः

GOVERNOR MADHYA PRADESH

-डा० भाई महावीर, पूर्व राज्यपाल, मध्य प्रदेश

श्री राजकृष्ण भक्त नहीं रहे! यह दुःखद समाचार मिला और आधी सदी से कुछ अधिक के संबंध का पटाक्षेप हो गया। मन में उन दिनों की बिखरी यादें एक तेज आंधी के समान आई और निकल गई। शुरूआत थी जब हमलोग जालंधर में थे। स्वयं लुट पिट कर ही नहीं पर लुट पिट कर आने वाले लोगों के जनसैलाब को बचाकर और आजादी की कठोर यादों को दिलों में ले कर आए थे, और जीवन के मानों भूकंप से क्षत–विक्षत अस्तित्व को फिर से एक नया आधार और आकार देने की ही नहीं, सारे सामाजिक ढ़ांचे को फिर से संभालने के प्रयास में लगे थे जिसके निजि और पारिवारिक पहलू भी थे किन्तु उसका महत्व बहुत कम था।

अस्थाई ठिकानों में बैठे 'शरणार्थी' के अपमानजनक विशेषण को लिए, किन्तु मन में यह उमंग थामे कि स्वतंत्रता आई है तो कल्याणकारी ही होगी। सोचते थे कि किसी न किसी तरह सब कुछ ठीक–ठाक हो जाएगा और क्रांतिकारियों ने जो गाया था कि 'बहार आएगी उस दिन जब अपना बागबां (माली) होगा!' वह यथार्थ बन जाएगा। तात्कालिक दृष्य में बहुत घाव थे, पीड़ा थी और कैसे बहार आएगी और सब सुहावना हो जाएगा समझ में नहीं आता था फिर भी भरोसा था कि सब कुछ अच्छा हो जाएगा।

जालंधर के एक मुहल्ले में जिसे कराड़ खां का बेतुका सा नाम मिला हुआ था उसके मुस्लिम निवासियों के छोड़े मकानों में एक बड़े मकान में संघ का कार्यालय बना था और गोपाल नगर नाम देकर हम टिके हुए थे। बैठक इत्यादि जब होतीं या यों भी मिलने का अनौपचारिक अवसर होता तो एक दुबला पतला युवक चेहरे पर सरल मुस्कान और अपनत्व का भाव लिए दिखाई देता। पंजाब रिलीफ कमेटी के नाम से जो काम पश्चिमी पंजाब और सीमा प्रांत में अपने संगठन ने किया था जिस कारण उसे सारे क्षेत्र के लोग अपने भ्राता, अपने प्राण रक्षक के रूप में देखते थे। उस का भी कोई ठौर ठिकाना यहां नहीं था, उस टीम के एक सक्रिय सदस्य थे भगत जी।

किन्तु सब कुछ बढ़िया बनने की आशा को बड़ा झटका कुछ महीनों में ही लगा जब महात्मा गांधी की हत्या का बहाना लेकर संघ बल्कि हिन्दुत्व की भावना को ही कुचल डालने का प्रयास कांग्रेस सरकार की ओर से हुआ। गांधी हत्या के मुकदमे के निर्णय में संघ का लेश मात्र भी संबंध न सिद्ध होने के बाद भी जब न्याय नहीं मिल रहा था तो एक बड़े संघर्ष का सहारा लेना पड़ा। तब तक देश के इतिहास का सबसे बड़ा सत्याग्रह हुआ। जब सफलता मिली पर उस समय यह सोच उठने लगी कि राजनीतिक क्षेत्र में अपनी विचारधारा की अभिव्यक्ति आवश्यक होना चाहिये । तभी डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ का जन्म हुआ। किन्तु उस विचारधारा के सफल होने के मार्ग में कांग्रेस के अतिरिक्त बड़ी बाधा थी कम्यूनिस्टों की जिनको सोवियत रूस का खुला सहयोग और समर्थन था। श्रमिक वर्ग में उनकी पकड़ का मुकाबला कैसे हो सकेगा यह चिंता उठने लगी। कम्यूनिस्ट तो श्रमिकों के स्वार्थ भाव को उकसा कर हड़तालों और हुड़दंग से उन्हेंअपनी मुट्ठी में रखते थे और ये विदेशी तत्वों का शस्त्र बन जाते थे । इस चुनौती को स्वीकार किया श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने और भारतीय मज़दूर संघ की स्थापना की गई। जो मूल मंत्र भामस ने अपनाया वह देश भक्ति उभारने वाला ही थाः

'देश के हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम !'

जितना आवश्यक था श्रमिकों को देश भक्ति की प्रेरणा देना उतना ही कठिन भी था और लंबे समय तक यही माना जाता रहा कि भले ही यह संगठन चलेगा पर कम्युनिस्ट यूनियनों का वर्चस्व बना रहेगा।

आज की कहानी तो एक लंबे संघर्ष की गाथा है जो भा.म.सं. के सूत्रधारों को देश के सामने प्रस्तुत करनी चाहिए। मैं तो यही कह सकता हूं कि श्री ठेंगड़ी के जिन दृढ़ प्रतिज्ञ और समर्पित साथियों के बल पर वह स्थिति आई कि भारतीय मजदूर संघ ने शेष सब श्रम संगठनों को मात दे कर प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया उनमें राजकृष्ण भक्त जी उच्चतम् थे। फूलों की वर्षा और जयकारों की तुमुल ध्वनि में साधारण दम खम वाले लोग भी साथ चल सकते हैं परंतु जब उपेक्षा, विरोध और आतंक का बोलबाला हो तो कार्यकर्ता की परख होती है। ऐसी आग में जो कुन्दन बनकर निकले ऐसे भगत जी की दुर्बल काया में कितनी प्रबल संकल्प–शक्ति थी यह अनुमान लगाना कठिन था। अच्छी खासी बैंक की नौकरी छोड़कर परिवार की देखभाल भी बहुत कुछ भगवान को सौंपकर भगत जी ने जो कर्तव्य पथ आलोकित किया वह चिरकाल तक प्रेरणा देता रहेगा।

इस समय चुनावों की धूमधाम में विचारशील नागरिक यही सोचता है कि लोकतंत्र को अपराधियों, अवसरवादियों या फिल्म अभिनेताओं के हाथों में सौंप कर क्या प्रगत राष्ट्र बनने का अपना स्वप्न हम साकार कर सकेंगे ? भ्रष्टाचार के जो साकार रूप दिखाई देते हैं, या जो मौसम से भी पहले दल बदलते हैं उन प्रतिनिधियों से कोईे अच्छा विकल्प क्यों नहीं दीखता ? ऐसे परिदृष्य में राजनीति को भगत जी जैसे लोगों की आवश्यकता है। उनकी आज कमी ही पतन का बड़ा कारण है।

अपने चिरकाल के साथी–सहकर्मी परंतु कर्तृत्व में कहीं अधिक निष्ठावान तथा बलिदानी मित्र को मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। प्रभु उनकी दिव्य आत्मा को अपनी शरण में लें।

कुप्. सी. सुदर्शन, सरसंघचालक, रा. स्व. संघ

श्री राज कृष्ण भक्त, एक ऐसे नींव के पत्थर के समान थे जिनके बल पर ही ऐसा विशाल संगठन रूपी भवन खड़ा हो पाया है । भारतीय मजदूर संघ को देश के एक वृहत व प्रभावी श्रमिक संगठन के रूप में खड़ा करने में स्व. भक्त जी का अपूर्व योगदान रहा । ऐसे नींव के अनेक पत्थर अदृष्य होते जा रहे हैं । परमपिता परमेश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें, यही कामना है ।

सत्यमेव जयते

केदार नाथ साहनी
राज्यपाल
राजभवन,
गोवा–४०३ ००४

नं.: राज्य गोवा / ४/ २००४ / ६६१ — १६.४.२००४

प्रिय श्री प्रेमनाथ जी,

फोन पर अभी अभी आप से श्री राजकृष्ण भगत जी के निधन का अति दुखद समाचार जानकर मुझे गहरा आघात लगा है। श्री भगत जी से मेरा गत अनेक दशकों से गहरा संबंध रहा है। लंबे समय तक वह मेरे अनन्य सहयोगी रहे हैं और मुझे उन्हें बहुत निकट से देखने का अवसर मिला है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अत्यंत निष्ठावान एवं समर्पित कार्यकर्ता के रूप में, उन्होंने मुझे हमेशा प्रभावित किया है। एक आदर्श स्वयंसेवक के जिन गुणों की हम कल्पना करते हैं, वे सभी भगत जी में मौजूद थे।

विनम्र, सत्यनिष्ठ, सबको साथ लेकर चलने वाले और सबकी सहायता करनेवाले भगत जी का, इसी कारण, सब आदर करते थे। कोई भी कठिनाई, उन्हें कभी अपने कर्तव्यपथ से डिगा नहीं सकी। उनका अतिथ्य सत्कार और स्नेह भरा व्यवहार सब का मन जीत लेता था।

संघ के स्वयंसेवक के रूप में, अध्यापक के रूप में पंजाब नेशनल बैंक के कर्मचारी के रूप में अथवा भारतीय मजदूर संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं अधिकारी के रूप में, अपने कर्तव्य का निर्वाह उन्होंने जिस समर्पण भाव से किया है, उससे उनके वरिष्ठ अधिकारी उनकी प्रशंसा करते थे, सहकर्मी उन्हें अपना सच्चा मित्र समझते थे तथा कनिष्ठ सहयोगी सदा उनका आदर करते थे।

अपने ऐसे सच्चे समाज सेवी सहयोगी के निधन का मुझे हार्दिक खेद है। भगवान उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा उनके परिवार जनों को एवं अन्य सभी सहयोगियों को शक्ति दें कि वे सभी उनसे प्रेरणा पाकर, समाज सेवा के अपने व्रत को पूरी तरह निभाते रह सकें।

भवदीय,
हस्ता/–
केदार नाथ साहनी

नव दधीचि तुम्हें शत्-२ प्रणाम्

भारत विभाजन से पूर्व पंजाब के मिन्टगुमरी जिला स्थित 'कबूला' ग्राम में प्रणामी मत में गहरी आस्था रखने वाले एक साधारण परिवार में १९२१ में जन्में ८३ वर्षीय श्री राजकृष्ण भक्त, दो पुत्र एवं तीन पुत्रियों के भरे परिवार को छोड़कर ३० मार्च प्रातः हम सभी से विदा हो गए।

प्रारंभ में सफल अध्यापक एवं अखाड़े के शौकीन आप रहे। बैंक सेवा के दौरान आपको जगाधारी पेपर मिल में चल रहे आंदोलन का नेतृत्व करने का दायित्व सौंपा गया। वहां हुई हड़ताल में लंबे समय तक आमरण अनशन पर उन्हें बैठना पड़ा तथा जेल भी जाना पड़ा। कई कर्मचारियों को नौकरी से निकाले जाने पर उनकी आर्थिक सहायता के लिए भगत जी ने कर्ज भी लिया जिसे वे वर्षों तक चुकाते रहे। निस्संदेह इस आंदोलन के फलस्वरूप सम्पूर्ण उत्तर भारत में जहां भारतीय मजदूर संघ का आधार दृढ़ बना । वहां अनेक पूर्णकालिक कार्यकर्ता भी भारतीय मजदूर संघ को प्राप्त हुए।

बैंक सेवा के दौरान पदोन्नति के अनेक प्रस्तावों को कर्मचारियों के हित संवर्धन के उद्देश्य से भगत जी ठुकराते रहे। १९७९ साधारण लिपिक के पद पर रहते हुए संघ अधिकारियों के आदेशानुसार सेवा–निवृत्ति आयु से पूर्व ही स्वेच्छा से सेवामुक्त भी हो गए।

राष्टीय स्वयंसेवक संघ के समर्पित व निष्ठावान स्वयंसेवक के नाते करनी तथा कथनी समान रखने वाले भक्त जी ने संघ एवं भारतीय मजदूर संघ में अनेक जोखम भरे दायित्वों, वह संघ प्रतिबंध के समय कारागार के अन्दर पहुंचकर दायित्व निभाने का हो या फिर बाहर भूमिगत रहकर मार्गदर्शन करने का रहा हो अथवा क्रमांक–१ के प्रतिष्ठावान श्रम संघ के अध्यक्ष व महामंत्री के दायित्वों को वर्षो –वर्षो तक निभाने का रहा हो, उन सभी को सफलतापूर्वक निभाया। बाद में आयु अधिक होने के बाद स्वयं ही पद मुक्त होकर भी सभी प्रकार के कार्य को पूर्व की भांति करते रहे। अभी भी वे आवासीय मंत्री का दायित्व संभाले हुए थे। जो भी व्यक्ति एक बार उनसे मिला वह उनकी सादगी, सच्चाई के प्रति स्पष्टवादिता एवं कर्मचारी हित में बड़े से बड़े नौकरशाह से भी भिड़ने की हिम्मत का प्रशंसक बने बिना नहीं रहा। भक्त जी के व्यवहार में शालीनता जीवन पर्यंत बनी रही।

उपेक्षित मजदूर क्षेत्र में दुबला पतला साधारण सा दिखने वाला व्यक्ति भी अजात्–शत्रु बन सकता है, यह कल्पना से परे है किन्तु 'मैं' नही 'तू ही' के आदर्श राष्टीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूज्य गुरूजी एवं भामसं के प्रेरणास्रोत मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी से उत्स्फुरित श्री भक्त जी पथिक बनते–बनते स्वयं पथ ही बन गए। उन्होंने अपने नेत्र 'गुरूनानक नेत्र बैंक' तथा निज देह भी शोध कार्य हेतु 'दधीचि देह दान समिति' को देने का संकल्प–पत्र पहले ही भर दिये थे ।

भबत जी का जीवन सर्व स्पर्षी एवं बहु आयामी होने के कारण हममें से प्रत्येक निश्चय ही अपनी अमूल्य स्मृतियां इसमें जोड़ सकता है। संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि वे भारतीय मजदूर संघ के लिए जिए और भारतीय मजदूर संघ केलिए ही जीवन का होम कर गए।

आत्म विलोपी एवं निराभिमानी होने के कारण संगठन में सदैव लुब्रिकेंट की सार्थक भूमिका वे निभाते रहे।

भारतीय मजदूर संघ की यह कार्यसमिति जहां इस तपःपूत, कर्म कठोर तपस्वी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है एवं परिवार के सदस्यों को इस हृदयविदारक कष्ट से उबारने केलिए परम परमात्मा से याचना करती है वहां भारतीय मजदूर संघ के आधार–भूत कार्य समिति सदस्यों से अपनी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए संगठन कार्य में बाधक बन रहे अपने किसी एक दोष को छोड़ने का संकल्प करके भगतजी की क्षति पूर्ति करने का आह्वान भी करती है।

–भा. म. सं. की १०४ वीं राष्टीय कार्यसमिति की सूरत बैठक ५–७ अप्रैल २००४ में पारित शोक प्रस्ताव।

तिल–२ निज देह को जलाने वाले स्व. भक्त जी

विश्व के बेजोड़ संगठक डा॰ हेडगेवार ने आखिर भक्त जी जैसे देश-हित में तिल-२ कर, निज देह को जलाने वालों की अखंड मालिका गूथने का संकल्प संजोया था ।

LIFE CHRONOLOGY OF SHRI RAJ KRISHAN BHAKT

BIRTH • June 1, 1921 at Village Kabula in Distt. Mintgomary (Pre-partition)

FAMILY • Eldest of four brothers (all settled in Delhi) and one late sister
Wife : Late Smt. Shambai
Elder son : Shri Ashok Kumar Bhakt, Sr. Manager PNB
Younger son : Shri Kuldeep Bhakt, C.A.
Three daughters
All the children are married and well settled

ENTRY IN SOCIAL LIFE
• Came in contact with RSS (Rashtriya Swayamsevek Sangh) at School going age.
• RSS job became his first priority. Fulfilled his responsibility of providing security to refugee families entrusted to him, even at the risk of his life

1947 • Settled at Jallandhar after partition.
Served as teacher while continuing his studies and shouldering responsibility entrusted to him by RSS
Started RSS Shakhas at far villages.
Joined service in Punjab National Bank.

BMS AND BHAKTJI

1958 • He received a packet of BMS Literature and flag from Delhi. He took it as an indication that he is to establish BMS work in Punjab.

1960 • Elected Punjab State BMS president alongwith Shri Sukhnandan Singh ji as State General Secretary.
• Orgnised unions among Tanga, Riksha drivers, Hawkers etc.
In Paradise Housery Ludhiana, there was a successful 12 day strike, forced a written agreement.

1963 • Jagadhri Paper Mill Management booked 63 workers in false cases. They were sent to jail. Bhaktji decided to be with the workers and remained in jail for about 5 months
• He declined to accept the Punjab Govt conditional offer of releasing the workers and recognising the BMS union in the Mill if Das Commission was set aside.

1965 • Started union in Punjab National Bank

1966 • Went on Indefinite Hunger Strike when NOBW office bearers in PNB were transferred to far off places. After 5 days a successful written agreement was made
• He contested/led movement against Bomb blast case in JCT Mill Phagwara in Oct. 1966.

1967 • Led strike in B.G. Corporation Patiala.

1968 • Led indefinite fast by Shri O.P. Aghi (1-15 Nov.) at Bhawani Cotton Textile Mill Abohar (Punjab)

1969 • Elected General Secretary of Punjab State BMS.
• Indefinite hunger strike for restoration of Ration Money to Civilian Employees of MES Pathankot after 1965 war. All the demands were accepted after 7 days of hunger strike.

1972 • Third BMS All India Conference (22-23 May Mumbai) passed a resolution that all wage earners should be paid a minimum bonus of 8.33%. Soon after Nagarpalika Karamchari Mahasangh (Municipal Employees Federation) of Amritsar went on strike when the demand for 8.33% bonus was not accepted. The Police used tear gas shells and opened fire to curb the strike. One employee "Jugal Kishore" was killed in Police firing. The strike spread through out the state and the state govt led by Giani Zail Singh as CM had to yield and pay bonus at 8.33% for the year 1972-73. Even the Muster roll employees got their share.

1974 • Punjab Non-Gazetted Employees Organisation (PNGEO) was formed on March 14, 1974.

भक्त जी अटल जी के साथ

भक्त जी पी० ए० संगमा जी के साथ

EMERGENCY (1975)
- Smt. Indira Gandhi then Prime Minister of India declared Emergency on 25th June, 1975.
- Rights of the people enshrined in the constitution were withdrawn. It applied to the TU movement also. BMS decided to launch a countrywide struggle. Govt on its part started arresting leaders in all walks of life. Bhaktji remained in Jail for 19 months.

1978
- Bhaktji was elected one of the National Secretaries of BMS in Jaipur All India Conference. He was made incharge of Punjab, J&K, Himachal Pradesh and Chandigarh with Headquarters at Jallandher.

1979
- *During TU movement in Rice Mills of Kapurthala, the owners in convence with the Police* arrested Shri Kartar Singh Rathore under 307 and sent him to jail. A BMS delegation led by Shri Bhaktji went to SSP Kapurthala on Jan 7, 1980 but refused to initiate talks without Kartar Singh Rathore. The SSP arranged Kartar Singh Ji to be there. After hearing Kartar Singh Ji it became clear that the charges were falsely framed. Bhaktji forced the Police and the Mill Owners to withdraw the case.

1980
- He got voluntary retirement from the Bank. 2 years prior to his date of superannuation.

1981
- All India Conference at Calcutta changed his HQrs from Jallandhar to New Delhi with additional responsibility of Resident Secretary.

MEMORABLE EVENT

1982
- During Vardhman Mill movement at Ludhiana the police allowed BMS to hoist Flag at the Gate. It was to be done by four workers only. When Bhaktji was told in Delhi he reached BMS office at Ludhiana. The Police, cunningly arrested Kartar Singh Rathore and resorted to Lathi Charge on the workers standing away from the scene. When Bhaktji came to know of it, he rushed to the spot, started a dharna in the middle of the road, advised the worker to stay away and remain peaceful. He too was arrested and sent to Jail. Next day the police withdrew the case.

1991
- He was made the All India General Secretary, of BMS. He travelled far and wide and strengthened the organisation.

1994
- He was elected the All India President of BMS. The BMS gained the top position during this period.

VANPRASTHI PRACHARAK BHAKTJI
- Bhaktji had thought of becoming a Vanprasthi Pracharak (Renouncing Hearth & Home) when he was in Ferozepur Jail during emergency. He got himself relieved of all family responsibilities and started working for BMS Day & Night.

DEH DAAN 1998 • Bhaktji willed to donate his mortal remains for medical use. After he breathed his last his family and other near and dear gladly donated his eyes to Guru Nanak Eye Hospital Delhi and the rest to Maulana Azad Medical College Delhi for research purposes through "Dadhichi Deh Dann Samiti".

2004

Feb 26 • Bhaktji fell ill during Steering Committee meeting in New Delhi.

Feb 28 • Admitted to Jessa Ram Hospital

March 2 • Relieved from Hospital, Stayed with Dr. Sunil Kheterpal, his nephew, at Shalimar Bagh, Delhi

March 6 • Accompanied his son, Kuldeep to Jallandhar

March 21 • Took part in Varshapratipada Celebrations in full Ganvesh (Uniform). "It was his last Dhawaj Pranam.
He came back from the Shakha on foot. Decided to attend Surat Karyasamiti Meeting in April.

March 25 • Reached Central Office BMS

March 27 • His health deteriorated

March 28 • Man. Thengadi Ji enquired of his health. Advised not to go to Surat.
Dr. Sunil (His Nephew) took Bhaktji with him. Admitted him in S.L. Jain Hospital
Kuldeep Ji (His son), at Jallandhar was informed.

March 29 • Abrupt changes in his health continued.

March 29-30 Night • He breathed his last at 1.45 AM

3 AM • Mortal remains brought to Central Office BMS for Darshan and Paying Homage.

BHAKTJI'S WILL

March 30 • His eyes were donated to Guru Nanak Eye Hospital
Other Mortal remains were donated to Dhadhichi Deh Dan Samiti which handed over it to Maulana Azad Medical College past.

एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व

–रेवती रमण शर्मा, प्रबंधक, पंजाब नैशनल बैंक, अधिकारी संगठन

श्री राजकृष्ण भक्त जी से पहली मुलाकात फरवरी १९७७ में पंजाब नैशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर पंजाब में तब हुई जब मैंने बैंक में कार्यग्रहण किया था। प्रारम्भ से ही मैंने भक्त जी में अपने लक्ष्य , उद्देश्य, कर्तव्य के प्रति निःस्वार्थ रहकर पूर्ण निष्ठा से काम करने की अद्भुत शक्ति देखी। उनके संपर्क में जो भी व्यक्ति आया उसके लिए वे कर्तव्य निष्ठा का पाठ पढ़ाने वाले प्रेरणास्रोत बने, वे सदैव ज़रूरतमंदों की सहायता करते और इस बात की तनिक भी परवाह नहीं करते थे कि अमुक व्यक्ति उनके आदर्शों / बातों को मानता है अथवा नहीं, कहने का तात्पर्य है कि टेड यूनियन में प्रायः आज नेता मात्र अपने पक्षधर का ही पोषण करते हुए दिखाई पड़ते हैं। भक्त जी को इस दृष्टि से अपवाद ही माना जा सकता है।

वे दिन आज तक याद है जब भक्त जी बैंक की सेवा में रहते हुए भी अवैतनिक अवकाश लेकर अपनी अधिकांश शक्ति सम्पूर्ण उत्तर क्षेत्र में ट्रेड यूनियन के काम को सुदृढ़ बनाकर मज़दूर सेवा में लगाते थे। यहां तक कि आर्थिक तंगी के दिनों में वेतन कटौती के बाद मिले हुए धन से भी वे प्रायः ज़रूरतमंदों की सहायता करते थे।

१९८० के वे दिन मुझे अभी तक बार बार याद आते हैं जब लुधियाना में वर्धमान मिल में कार्य कर रहे कुछ साथी सदस्यों के खूनी संघर्ष में कइयों को जान से हाथ धोना पड़ा व भांति भांति के चार्जों में जेल की सलाखों में बंद कर दिए गए। ऐसे समय में भक्त जी ने अद्भुत साहस व धैर्यपूर्वक इन समस्याओं का सामना किया एवं प्रभावित सदस्यों के परिजनों को उधार तक लेकर आर्थिक सहायता करते रहे।

प्रोस्टेट का ऑपरेशन हो जाने के बाद गिरने से कुल्हे की हड्डी टूटने पर इसमें स्टील डलवा कर छड़ी के सहारे मंत्रलयों में प्रत्यक्ष पहुंचकर मजदूर समस्याओं को अंतिम दिन तक सुलझाते रहे। उनका पहनावा ही नहीं अपितु खानपान भी सीधा सादा था।

अंगीकृत मजदूर सेवा के लक्ष्य से एकरूप हुए भक्त जी न तो उपचार हेतु हस्पताल में भर्ती होने पर और न ही बाद में विश्राम हेतु घर पर पहुंचने पर, लंबित मजदूर समस्याओं के निबटारे से मुक्त हो सके। ऐसी पुण्यात्मा के सान्निध्य से मैं निश्चय ही प्रभु कृपा से उपकृत हुआ हूं, ऐसी मेरी धारणा है।

शत्-शत् नमन

दत्तोपंत ठेंगड़ी

कुलदीप भक्त

कृष्ण लाल

कस्तूरी लाल

नई दिल्ली श्रद्धांजलि सभा – १४ अप्रैल २००४

भारतीय मज़दूर संघ के वयोवृद्ध नेता, वानप्रस्थी प्रचारक श्री राजकृष्ण भक्त को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आयोजित शोक सभा में भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी ने सर्वप्रथम आज के ही दिन जन्मे डा. भीम राव अंबेदकर का पुण्य स्मरण किया । डा. साहब ने निःसंदिग्ध शब्दों में कहा था कि ' ' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ चालक मा. सुदर्शन जी ने भक्त जी को नींव का पत्थर कह कर श्रद्धांजलि दी है, इससे बड़ी श्रद्धांजलि और क्या हो सकती है !

बायें से मा. मदन दास देवी, दत्तो पंत ठेंगड़ी एवं हसु भाई दवे

वस्तुतः पंजाब में भामसं. की नींव भक्त जी ने जगाधरी पेपर मिल आंदोलन के द्वारा डाली । इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए संघ के घोर विरोधी एवं पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों एवं श्रममंत्री, इंटक अध्यक्ष भगवद्‌याल शर्मा ने दमन चक्र चलाकर इस आंदोलन को सख्ती से कुचलने का षड़यंत्र रच लिया । तद्‌नुसार झूटे आरोपों में ६३ कर्मचारियों को अंबाला सैन्ट्रल जेल में बंद कर दिया गया । बंदीगृह में कर्मचारियों का मनोबल बनाये रखने के उद्देश्य से भक्त जी को भी जहां ५-मास तक अंबाला जेल में रहना पड़ा, वहाँ उन्हें निर्दोष बंदी कर्मचारियों को ससम्मान मुक्त किये जाने की तर्कसंगत माँग को लेकर जेल में ही आमरण अनशन पर बैठे संसद सदस्य श्री हुकम चंद कछवाया के प्राण रक्षा हेतु अन्य श्रम संघों द्वारा जेल के बाहर केन्द्र सरकार पर दबाव लाने के परिणामकारी फारमूले को बनवाने की दोहरी भूमिका निभानी पड़ी । भक्त जी के अद्‌भुत संपर्क क्षमता का ही यह परिणाम था कि पंजाब सरकार द्वारा हड़ताल समाप्त की जिम्मेदारी केन्द्र सरकार पर डाल दिये जाने पर, सोसलिस्ट पाटी के जनरल सेक्रेटरी श्री रामसेवक यादव एवं संसद सदस्य श्री अब्दुल गनी डार के व्यक्तिगत् दबाव के कारण गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नंदा की मध्यस्थता में एक समझौता फारमूला तैयार हुआ जिसके आधार पर संसद सदस्य श्री खुर्शीद अहमद ने जेल पहुँचकर श्री कछवाया की भूख हड़ताल तुड़वाई । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जगाधरी पेपर मिल के आंदोलन की सकारात्मक परणति का श्रेय संघ के प्रभाव से कहीं अधिक भक्त जी के संपर्क कौशल्य को जाता है ।

न्यायोचित कर्मचारी मांगों के लिये चलाये जा रहे इस आंदोलन में निर्णायक मोड़ तब हाया जब पंजाब सरकार ने भामसं. के सामने यह प्रस्ताव रखा कि यदि मुख्यमंत्री कैरों के विरुद्ध भ्रष्टाचार की जँच के लिये जनसंघ के आग्रह पर केन्द्र सरकार द्वारा गठित दास कमिशन को वापस ले लिया जाये तो पंजाब सरकार कर्मचारियों के विरुद्ध चलाये जा रहे सभी मुकदमें वापस ले लेगी एवं जगाधरी पेपर मिल में भारतीय मजदूर संघ की यूनियन को मान्यता भी दे दी जायेगी ।

किंतु आंदोलन के प्रभारी स्व. भक्त जी ने सिद्धांतों से समझौता करने की बजाय इस प्रस्ताव को एक दम अस्वीकार कर दिया और वर्षों-२ तक इस अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की हिम्मत दिखलाई ।

संघ संस्कृति से ओत-प्रोत भक्त जी ने भामसं. का अध्यक्ष पद स्वेच्छा से दूसरे को सौंप दिया । मजदूर हित से प्रेरित हो कर ही भक्त जी अभिमान छोड़कर बिना संकोच प्रधानमंत्री से लेकर चपरासी तक को मिलते थे । निर्माण करने के बाद बड़ी से बड़ी संस्था आज धराशाई हो रही है । अतः देश को एवं मजदूरों को यदि बचाना है तो भुलावें, यह सीख भक्त जी के जीवन से हम आज ले सकते हैं । पद पर न रहते हुए भी भक्त जी कार्यरत् रहे । भारतीय जीवन दर्शन में पद का महत्व नहीं है । कार्य एवं गुण के आधार पर लोगों को सम्मान मिलता है । पश्चिमी देशों में ऐसा नहीं है ।

नेपोलियन के अनुसार, पश्चिम में, पद पर होने के कारण प्रतिष्ठा मिलती है किंतु भारत में राजमहल के शिखर पर बैठा कौव्वा, भूमि पर बैठे गरूड़ से श्रेष्ठ नहीं हो सकता । अतः संघ के आदर्श के अनुसार मैं स्व. भक्त जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ ।

सहसरकार्यवाह मा. मदनदास देवी ने कहा कि स्व. भक्त जी ने निज नेत्र एवं देह-दान द्वारा हमारे सम्मुख स्वयंसेवकत्व का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया है । जीवन पर्यन्त निर्भिमानी रहकर करनी-कथनी समान रखने वाले भक्त जी भविष्य में भी हमारा मार्ग दर्शन करते रहेंगे ।

भामसं. अध्यक्ष हसमुख भाई दवे ने कहा कि महामंत्री निर्वाचित होकर दिल्ली आने पर मा. भक्त जी ने मुझे आश्वस्त किया कि आप यहाँ केवल रहें, आपका सारा काम मैं संभाल लूंगा । उनका जीवन सादा व सरल था वे सभी की सुनते थे भले ही वह मजदूर संघ का न भी रहा हो । समस्या के निपटारे बिना उन्हें चैन नहीं मिलती थी । दीन-दुखी के सहायक भक्त जी को तो स्वयं ही ईश्वरीय सत्ता लेने आई । सेवा-भावी बन कर ही भक्त जी को हम सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं ।

श्रद्धांजलि सभा का संचालन श्री उदय पटवर्धन ने किया एवं सहायता श्री रामदास पांडेय ने की ।

श्रममंत्री व केन्द्रीय श्र

साहिब सिंह वर्मा, श्रममंत्री

वे वस्तुतः महामानव थे । असंगठित क्षेत्र के मजदूर को अग्र पंक्ति में खड़ा करने की उनकी उत्कट आकांशा को साकार करने के लिये मैं संकल्पबद्ध हूँ ।

हसमुख भाई दवे, अध्यक्ष भामसं.

उनका जीवन सादा व सरल था वे सभी की सुनते थे भले ही वह मजदूर संघ का न भी रहा हो । समस्या के निपटारे बिना उन्हें चैन नहीं मिलती थी । दीन-दुखी के सदा सहाई भक्त जी को तो स्वयं ही ईश्वरीय सत्ता लेने आई । सेवा-भावी बन कर ही भक्त जी को हम सच्ची श्रद्धांजली अर्पित कर सकते हैं ।

डा. एम. के. पंधे, अध्यक्ष सीटू

संयुक्त मजदूर आंदोलन को यशस्वी बनाने में उनकी भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही । व्यक्तिगत संबंधों में राजनैतिक मतभेदों को उन्होंने कभी आड़े नहीं आने दिया । मेरी पत्नी ने भी श्रद्धासुमन चढ़ाने का आग्रह किया । संयुक्त आंदोलन के अधूरे कार्यों को मिलजुल कर हमें पूरा करना होगा ।

उमराव मल्ल पुरोहित,
महामंत्री एच.एम.एस.

भक्त जी सदैव उपलब्ध रहे । मजदूर हित के अतिरिक्त उनकी कोई आकांक्षा ही नहीं थी । मजदूर आंदोलन में समर्पण को भी हमने महत्व देना चाहिये - यह मेरी इच्छा है ।

महादेवन, उपमहामंत्री एटक

He was the leader of the leaders. मजदूर हित के ही कारण भक्त जी ने उ.प्र. बिजली हड़ताल को सफल बनाने में जी तोड़ प्रयास किया ।

महासंघों द्वारा श्रद्धांजलि

चंडीदास, मंत्री इन्टक

निर्भिमानी भक्त जी की सादगी से मैं बहुत प्रभावित हूँ ।

ओ.पी.वर्मा, एन.एफ.आई.टी.यू.

भक्त जी मेरे अच्छे मित्र थे । नेक व्यक्ति को किसी सर्टिफिकेट की आवश्यकता ही नहीं होती ।

बी. एस. शुक्ला,
महामंत्री ए.आई.सी.सी.टी.यू.

जब भी भक्त जी से मिला मुझे कोई न कोई शिक्षा उनसे अवश्य मिली ।

आर.के.शर्मा,
मंत्री यू.टी.यू.सी. (एल.एस.)

पितृ-वत स्नेह भक्त जी से मुझे मिला

तपन दत्ता, यू.टी,यू.सी.

त्याग एवं सादगी की साक्षात मूर्ति भक्त जी थे ।

शोक संदेश

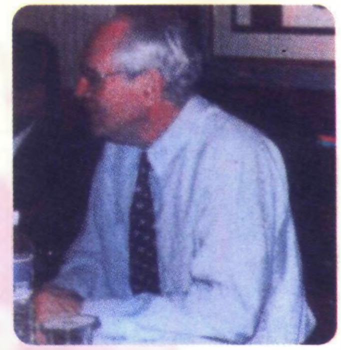

Sri Herman Van der Laan,
Director and ILO representative in India

Mr. Raj Krishan Bhakt had a long and cordial association with the ILO through Bharatiya Mazdoor Sangh. We held Mr. Bhakt in high esteem for his untiring work in the cause of the Indian Labour Movement.

On behalf of the ILO and on my own behalf I send heartfelt condolences to the bereaved family of Mr. R. K. Bhakt and to his associates in the Bharatiya Mazdoor Sangh.

Dr. P. D. Shenoy
Labour Secretary, Govt. of India

Shri Bhakt was a honest sincere and hardworking Trade Union Worker and Leader. Despite old age and occasional illness he continued to work disregarding his personal comforts. I have learnt a lot from him. He was a dear friend of mine. He showed his self effacing and sacrificing qualities even in his death by donating his mortal remains. I sincerely pray to god to grant eternal peace to his departed soul.

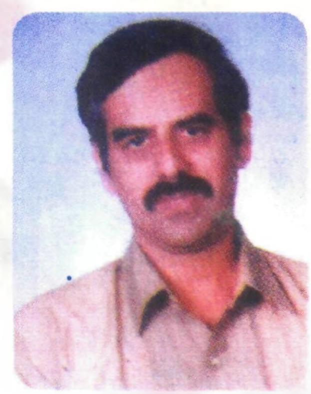

V. Parmeshwaran
Director, CBWE

We are deeply grieved at the sad demise of Sri Raj Krishan Bhakt. His lifelong dedication for the cause of workers and also to the Bharatiya Mazdoor Sangh made him immortal. He was greatly loved by the workers because his doors were open all the time to listen to the problems of workers and he also rendered all possible help to them. His death is a great loss to the workforce and to the organisation. I, on my personal behalf and on behalf of Central Board for Workers Education, convey heartfelt condolences to the members of the bereaved family.

We pray Almighty that his soul may rest in peace !

भक्त जी भारत मां के सच्चे सपूत थे

– डा० सुनील खेतरपाल, (भतीजा) शालीमार बाग जिला संघ चालक

छुटपन से आप कृष्णभक्त रहे। कालान्तर में उन्होंने प्रणामी सम्प्रदाय के स्वामी प्राणनाथ जी की अखंड वाणी की चौपाई

"मानषे देह अखण्ड फल पाइए, सो क्यों पाय के वृथा गमाइए ! ए तो अधाखिन को अवसर, सो गमावत मांझ नीदंर !! "

को अपने जीवन में चरितार्थ कर जीवन धन्य बना लिया। अंगीकृत समाजसेवा में कई बार उन्हें जेल जाना पड़ा किन्तु जीवन में कभी पीठ नहीं दिखाई। सम्पूर्ण परिवार के धर्मनिष्ठ होने का संतोष भक्त जी के मुख पर मृत्यु के समय भी स्पष्ट झलकता था। ऐसे सच्चे सपूत को परम पिता परमात्मा अपने श्री चरणों में स्थान दें, यही हम सब की विनम्र श्रद्धांजलि है।

श्रद्धांजलि अर्पित करने वाले अन्य

मा. मदनदास देवी, सहसरकार्यवाह, रा. स्व. संघ

स्व. भक्त जी ने निज नेत्र एवं देह-दान द्वारा हमारे सम्मुख स्वयंसेवकत्व का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया है । जीवन पर्यन्त निंभिमानी रहकर करनी-कथनी समान रखने वाले भक्त जी भविष्य में भी हमारा मार्ग दर्शन करते रहेंगे ।

जय प्रकाश भक्त (कनिष्ट भ्राता)

बचपन में ही पितृविहीन होने पर ज्येष्ट भ्राता स्व. राज कृष्ण भक्त ने ही संपूर्ण परिवार का पालन पोषण किया । उनका संपूर्ण जीवन समाज सेवा के लिये समर्पित रहा, इसी के लिये उन्हें अनेक बार जेल भी जाना पड़ा ।

मा. सत्य नारायण जी बंसल, दिल्ली प्रांत संघ चालक

नींव के पत्थर एवं शिखर की शोभा थे भक्त जी ।

चिरंजीव सिंह, राष्ट्रीय सिख संगत

सर्वस्व न्यौछावर करने वाले गुरू गोविन्द भक्त जी के आदर्श थे, तद्नुसार उन्होंने भी जीते जी एवं मरणोपरान्त भी निज नेत्र, एवं देह समाज को समर्पित कर दिया ।

अख्तर हुसैन (सर्वपंथ समादर मंच)

मैं भक्त जी को पिता तुल्य मानता था । हम दोनों ने दीपावली पूजन जालंधर पर साथ-साथ किया ।

ईश्वर दास महाजन
सह सयोजक, स्वदेशी जागरण मंच

वे संकल्प के धनी थे । उन्होंने जीवन में कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा ।

'रियलाईज्ड सोल'

जालंधर से स्व. भक्त जी जब १९८१ में दिल्ली आये तब मा. ठेंगड़ी जी ने केन्द्रीय कार्यालय में यदा-कदा आकर विशेष पत्रों के उत्तर लिखने वाले एक पुराने स्वयंसेवक, राष्ट्रपति जाकिर हुसैन के निजी सचिव अवकाश प्राप्त श्री विनायक फड़के से कहा कि अब यहाँ आपको एक '' से भी भेंट हुआ करेगी ।

इस लंबे अंतराल में साथ-२ रहने के कारण भक्त जी को निकट से देखने के अनेकों अवसर आये, मैंने उन्हें सदैव ही उन्नीस की बजाय इक्कीस ही पाया !

प्रेम नाथ शर्मा

बायें से सर्वश्री कस्तुरी लाल, जय प्रकाश, कुलदीप, ठेंगड़ी जी, कृष्ण लाल, राजेश, आलोक, पीछे अशोक प्रभाकर

पुष्पांजलि करने वालों में कुछ अन्य

- अशोक प्रभाकर, दिल्ली प्रांत प्रचारक
- सूर्य कृष्ण, संगठन मंत्री, अधिवक्ता परिषद्
- रमेश प्रकाश, क्षेत्र कार्यवाह
- विजय कुमार, दिल्ली प्रांत कार्यवाह
- कुलदीप भक्त,
- कस्तूरी लाल भक्त
- कृष्ण लाल भक्त
- श्याम खोसला, पत्रकार
- बी. एल. शर्मा प्रेम, पूर्व सांसद
- हरि कृष्ण पाठक, एडवोकेट
- संतोष तनेजा, निदेशक आर्गनाईज़र व पांचजन्य साप्ताहिक
- सुदर्शन सरीन, अध्यक्ष हरि. चैम्बर ऑफ कॉमर्स
- राज कुमार गुप्ता, पूर्व अध्यक्ष, दिल्ली भामसं.
- वरूण कुमार सिंह, एडवोकेट
- आलोक कुमार एडवोकेट, अध्यक्ष दधिची देह-दान समिति
- रामेश्वर दूबे, राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद
- अरविंद खांडेकर, स्वदेशी जागरण. मंच
- राम कृष्ण शर्मा, महामंत्री, सेवा भारती
- वी. एस. यादव एवं वी नारायणा, पी.टी.ई.एफ.
- जयन्ती लाल, संगठन मंत्री राजस्थान
- संजय सफाई, बी.पी.एम.एस. पुणे
- श्रीमती बिन्द्रा चावला, मंत्री, दिल्ली प्रदेश
- पी. सी. शर्मा, बी.आर.एम.एस.
- चौधरी जिले सिंह, सदस्य दिल्ली जल बोर्ड
- राम प्रकाश मिश्रा, संगठन मंत्री, भामसं.
- गिरीश अवस्थी, उपमहामंत्री, भामसं.
- प्रेम नाथ शर्मा, सम्पादक, विश्वकर्मा संकेत
- महीनारायण झा, सार्व. प्रतिष्ठान महासंघ
- अमरनाथ डोगरा, मंत्री, भामसं.
- धनवंत राय मलिक, अध्यक्ष भामसं. दिल्ली प्रदेश
- राजेन्द्र सिंह चौहान, महामंत्री, भामसं., दिल्ली प्रदेश
- सतीश छाबड़ा, पी. एन. बी.
- जगदीश जोशी, कार्यालय मंत्री, भामसं.
- राम जी दास शर्मा, भामसं. केन्द्रीय कार्यालय

जालंधर शोक सभा – ११ अप्रैल २००४

भारतीय मजदूर संघ के वरिष्ट नेता कर्म कठोर तपः पूत स्व. राज कृष्ण भक्त को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए जलंधर की शोक सभा में भामसं. के संस्थापक मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी ने कहा कि भक्त जी सच्चे अर्थों में नींव के पत्थर थे । किसी भी सामाजिक कार्यकर्ता के लिए इससे ऊँची कोई पदवी हो ही नहीं सकती । भक्त जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्री ठेंगड़ी जी ने कहा कि उनका जीवन अत्यंत सरल था इसलिये वे जितने सरल ढंग से प्रधानमंत्री से मिलते थे, उतने ही सरल ढंग से वे किसी साधारण व्यक्ति चपरासी तक से भी मिलते थे । श्री भक्त जी को का भाव कभी स्पर्श तक नहीं किया । उनको स्वयं कभी यह लगता ही नहीं था कि उनके द्वारा कितना बड़ा महान कार्य किया जा रहा है ।

श्री ठेंगड़ी जी ने जगाधरी पेपर मिल में भामसं. द्वारा चलाये गये आंदोलन का उल्लेख करते हुए कहा कि उस आंदोलन में सफलता संगठन के प्रभाव से कहीं अधिक भक्त जी के संपर्क क्षमता के कारण मिली । उन दिनों अपने प्रतिकूल परिस्थिति होने के कारण जनसाधारण में यह चर्चा जोरों पर थी कि इस आंदोलन में ही भामसं. की समुचे पंजाब में या तो मौत हो जायेगी या इसे नवजीवन प्राप्त होगा। भक्त जी ने स्वयं जेल में जाने से पूर्व सभी प्रमुख लोगों से संपर्क स्थापित किया था । उस समय पंजाब के मु. मंत्री प्रताप सिंह कैरों एवं श्रम मंत्री भगवद्याल शर्मा थे जो इंटक के अध्यक्ष भी थे एवं उनका केन्द्र जगाधरी ही था । राज्य सरकार ने स्पष्ट घोषणा कर दी थी कि इस आंदोलन का निर्णय केन्द्र सरकार ही करेगी, राज्य सरकार नहीं । केन्द्र में गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नंदा एवं श्रम मंत्री श्री जय सुख लाल हाथी थे । सोशलिस्ट पार्टी के जनरल सैक्रेटरी राम सेवक यादव तथा संसद सदस्य अब्दुल गनी डार के व्यक्तिगत् दबाव के कारण, गुलजारी लाल नंदा की मध्यस्थता में समझौता पत्र तैयार हुआ, जिसके आधार पर अंबाला सैन्ट्रल जेल में आमरण अनशन पर बैठे संसद सदस्य श्री हुकम चंद कछवाया की भूख हड़ताल समाप्त करवाई गई ।

भाजपा नेता श्री बलराम जी दास टंडन ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि भक्त जी ने अपने बचे हुए शरीर से भी समाज की सेवा किस प्रकार हो सकती है यह मार्ग हम सभी को दिखाया है । इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग संघचालक ठाकुर बलवंत सिंह ने कहा कि भक्त जी व्यक्तिगत् स्वार्थ, पारिवारिक स्वार्थ तथा अन्य सभी स्वार्थों से ऊपर उठकर सभी सीढ़ियों को पार करते हुए ब्रह्मांड में विलीन हो गये ।

भामसं. के महामंत्री उदय पटवर्धन ने संगठन की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सामान्यतः श्रमिकों के प्रति समाज की दृष्टि सम्मान की नहीं होती जब कभी समाज के सामने श्रमिक क्षेत्र का विचार होता है तब हुड़दंग, अशांति, आंदोलन आदि का चित्र सामने आता है । परंतु भक्त जी ने श्रमिक क्षेत्र में इतिहास रचा है । भक्त जी के काम के लिये, उनके समर्पित जीवन के लिये संपूर्ण देश उन का ऋणी रहेगा । श्रमिक क्षेत्र का सौभाग्य है कि राज कृष्ण भक्त जैसा कार्यकर्ता श्रमिक क्षेत्र को मिला । हम सभी के लिये वे प्रेरणा के स्त्रोत् थे । उन्होंने कहा कि जब संपूर्ण देश में जीवन मूल्य घट रहे हैं ऐसे समय में भक्त जी जैसा व्यक्तित्व प्राप्त होना, यह हम सभी के लिये निश्चय ही सौभाग्य की बात है । श्री भक्त जी सामान्य परिवार से आये किंतु मानव जीवन की जिन ऊँचाइयों तक वे पहुंचे वहां तक विरले लोग ही पहुंच पाते हैं । उन्हीं के नेतृत्व में भामसं. शीर्षस्थ स्थान पर पहुंचा है । पुनः सदस्यता सत्यापन् होने वाला है । इस सदस्यता

२१वीं सदी के दधिचि ऋषि

२१वीं सदी के दधिचि ऋषि अर्थात् श्री राज कृष्ण जी भक्त का जीवन समाज सेवा व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सच्चे स्वयंसेवक के रूप में था । मैंने १९५३ से १९६३ तक उनके साथ मिलकर संघ के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्य किया । उनका पारिवारिक जीवन अपने तीन भाईयों को लेकर बड़ा सादा व सरल था । माननीय भक्त जी ने भारतीय मजदूर संघ का काम शून्य से शुरू करके चरम सीमा तक पहुंचा दिया । ऐसे कर्मठ कार्यकर्ता से अखिल भारतीय प्रधान बने और उस मजदूर संस्था के जो विश्व में बड़ा स्थान रखती है और भारत में सबसे बड़ा मजदूर संगठन घोषित किया गया हो ।

माननीय भक्त जी ने जीवन में कभी भी किसी राजनैतिक पद की चाह नहीं रखी, जबकि इसी तरह के मजदूर संगठनों के साधारण कार्यकर्ता भी राज्य सभा में अपना स्थान बना लेते हैं । भक्त जी ने कभी भी मन में सोचा तक नहीं था कि मुझे राजनैतिक पद मिलना चाहिए, यही उनके जीवन की सच्ची पहचान । मैंने उनके साथ कदम से कदम मिलाते हुए संघ का कार्य किया और उनके जीवन से प्रेरणा लेता रहा । मैं उन्हें सच्चे दिल से श्रद्धांजली अर्पित करता हूं

राजपाल कोछड़
जालंधर जिला संघ चालक

सत्यापन् में हम सभी के प्रयास से भामसं. का ध्वज ऊँचे शिखर पर लहराये, यही भक्त जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि वस्तुतः हम सभी की होगी। श्री भक्त जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्री उदय पटवर्धन ने कहा कि ८३-लाख की सदस्यता वाले संगठन में यह संभव है कि कोई निर्णय गलत भी हो जाए, ऐसे ही एक निर्णय का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि भक्त जी किसी गलत निर्णय के लिये, अपनी गलती मानने में तनिक भी संकोच नहीं करते थे। 'मैं सेवकों का सेवक हूं' - यह सेवा का भाव अंतिम क्षण तक उन्होंने अक्षुण्ण बनाये रखा। अंत में श्री उदय पटवर्धन ने यह कामना की कि भक्त जी को मोक्ष प्राप्त हो तथा उनके द्वारा दिखाये गये एवं उनके जलते जीवन से प्रेरणा लेकर, भामसं. को नई छवि प्राप्त हो।

कनिष्ट भ्राता श्री लाजपत राय ने पिता तुल्य संपूर्ण परिवार के पालक श्री भक्त जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की एवं जालंधर की शोक सभा में पधारने के लिये मा. ठेंगड़ी जी सहित आये हुए सभी का हृदय से आभार व्यक्त किया।

अ. भा. जागरण प्रमुख श्री विश्वनाथ जी ने कहा कि श्री भक्त जी हम सभी को जीवन की दिशा दे गये कि हमें कैसा समाज जीवन जीना चाहिये। उन्होंने कहा कि हम सभी अपने जीवन में झांक कर देखें कि हमारा जीवन कितना समर्पित है। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

श्री भक्त जी के सहपाठी एवं विभाग सहकार्यवाह श्री बलबीर शर्मा ने स्व. भक्त जी को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। विभिन्न संगठनों के प्राप्त शोक प्रस्ताव तथा भामसं. की कार्यसमिति द्वारा सूरत में पारित प्रस्ताव को मंत्री श्री रामदास पांडेय ने पढ़कर सुनाया। श्री भक्त जी के भतीजे डा. सुनील खेतरपाल ने परिवार की ओर से विश्वास दिलाया कि भक्त जी ने जिन आदेशों के लिए अपना जीवन समर्पित किया। उन आदर्शों का पालन परिवार के सभी लोग करेंगे तथा उनके अधूरे कार्य को पूरा करने में संपूर्ण परिवार का पूरा-२ योगदान रहेगा। तत्पश्चात् निम्नांकित भक्त परिवार ने श्रद्धा सुमन समर्पित किये :-

भाई :- सर्वश्री लाजपत राय भक्त, जय प्रकाश भक्त, कृष्ण लाल भक्त, कस्तूरी लाल भक्त

पुत्र व पुत्रवधु :- श्री अशोक भगत व श्रीमती पुष्पा, श्री कुलदीप भगत व श्रीमती सुष्मा

पुत्री व जमाता :- श्रीमती कांता रानी व श्री महिन्द्र पाल रसवंत, श्रीमती आशा व श्री चन्द्र मोहन माहना, श्रीमती कमलेश पत्नी स्व. श्री अशोक अरोड़ा

पौत्र :- मनीष भक्त, अमित भक्त, विकास भक्त, पीयूष भक्त

सुश्री रेखा राजे अ. भा. सेवा प्रमुख राष्ट्र सेविका समिति, सर्वपंथ समादर मंच के श्री अख्तर हुसैन, भामसं. के सर्वश्री लक्ष्मण रविन्द्र सिंह एवं राम लुभाया बावा, रा. स्व. संघ के सेवा प्रमुख श्री प्रेम चन्द्र गोयल तथा विद्यार्थी परिषद्, विश्व हिन्दू परिषद्, भारतीय किसान संघ एवं स्वदेशी जागरण मंच के पदाधिकारियों एवं अन्य प्रतिष्ठित सर्वश्री मनोरंजन कार्यालय, मदन मोहन मित्तल, विनोद शर्मा, अशोक गांधी, राजीव चोपड़ा एवं हंसराज चोपड़ा ने भी पुष्पांजलि अर्पित की। शोक सभा का प्रारंभ प्रणामी समाज की सुश्री आशा प्रदीप भक्त की मानव जीवन पर एक मार्मिक स्वरांजली एवं बाद में उच्चकोटि के विद्वान श्री राजन स्वामी की श्रद्धांजली द्वारा हुआ। भारत विभाजन के पश्चात भक्त जी का कार्यक्षेत्र अधिकांश जालंधर रहा। अतः उनके समर्पित सुगंधित जीवन की महक से समूचे पंजाब का श्रमिक क्षेत्र सुगंधित हुआ था। जालंधर की इस शोक सभा में स्थानीय जन समुदाय के अतिरिक्त पंजाब के दूरस्थ अंचलों तक से आये सैकड़ों की संख्या में प्रशंसकों ने खड़े होकर सजल नयनों से महान नेता को मौन श्रद्धांजली अर्पित की।

पंजाब प्रदेश के प्रमुख १५ संगठनों द्वारा पारित एवं भामसं. से संबद्ध ३६ यूनियनों के शोक प्रस्ताव भी प्राप्त हुए।

मजदूर आन्दोलन का आदर्श व्यक्तित्व श्री भक्त जी

— श्याम सिंह चौहान मंत्री भारतीय राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस

भक्त जी मजदूरों के सच्चे मसीहा थे। मेरा उनसे संपर्क गोपाल पेपर मिल, यमुनानगर के मजदूर आन्दोलन १६६३–६४ में अम्बाला सेन्ट्रल जेल में हुआ। तब मैं गोपाल पेपर मिल में काम करता था और ट्रेड युनियन के बारे में बिल्कुल अनभिज्ञ था। किन्तु भक्त जी के व्यक्तित्व ने मुझे इस प्रकार प्रभावित और प्रेरित किया कि मैं अपना घर बार छोड़कर मजदूर आन्दोलन के साथ सदा के लिए जुड़ गया। आज मैं जो कुछ भी हूं वह भक्त जी की देन है।

पेपर मिल में आन्दोलन का मुख्य कारण युनियन की परस्पर स्पर्धा थी। युनियन के उपाध्यक्ष श्री बखेडू सिंह के साथ उस समय बहुसंख्य श्रमिक थे किन्तु अध्यक्ष को प्रबंधकों का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। श्रमिकों ने अपने रक्त से हस्ताक्षर करके बखेडू सिंह का समर्थन किया किन्तु प्रबंधको पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और परिणास्वरूप युनियन दो भागों में विभाजित हो गई। श्री बखेडू सिंह के समर्थन में आन्दोलन चला। जिसका नेतृत्व श्री राजकृष्ण भक्त ने किया जो संघर्ष के अंतिम समय तक आन्दोलन से जुड़े रहे। प्रबंधको व उस समय की राज्य सरकार ने प्रचंड दमन का चक्र चलाया। नवगठित युनियन को तोड़ने का भरसक प्रयास किया। ६५ युनियन कार्यकर्ता जेल मे ठूंस दिए गए। उस दौरान भक्त जी की भूमिका अत्यन्त प्रभावी रही। जेल के अन्दर रहते हुए उन्होंने सबका मनोबल बनाए रखा तथा जेल के बाहर भी आन्दोलन को दिशा संकेत देते रहे। फलस्वरूप लंबे ऐतिहासिक संघर्ष के उपरान्त सभी कार्यकर्ता जेल से बिना शर्त मुक्त किए गए और युनियन को मान्यता भी प्राप्त हुई। इस प्रकार कड़े संघर्ष के बाद भारतीय मजदूर संघ की विजय हुई और एक सशक्त युनियन का गठन संभव हो पाया। भक्त जी का नेतृत्व इस आन्दोलन की भट्ठी में तपकर खरा सोना सिद्ध हुआ।

स्व० भक्त जी के निधन से पूर्व मास भर का घटनाक्रम

मंत्रियों सहित संचालन समिति की २४, २५, २६ फर. ०४ नई दिल्ली बैठक में ही स्वास्थ्य बिगड़ने पर डा० महेश अग्रवाल के उपलब्ध न होने पर श्री रामदासपांडेय ने श्री भक्त जी की प्रारंभिक जांच डा० सिंहल से करवाने के बाद उन्हें जस्साराम निजि हस्पताल में भर्ती करवाने का विचार बनाया, किंतु हस्पताल से ऑक्सीजन एवं औषधि लेकर श्री भक्त जी की इच्छानुसार रात्री पहाड़गंज कार्यालय में लौटना पड़ा। सुधार की बजाए स्वास्थ्य में बिगाड़ देखते हुए २८ फर. को ही जस्साराम हस्पताल में उन्हें भर्ती करवा दिया गया तथा इसकी सूचना काठमंडु गए भक्त जी के भतीजे डा० सुनील को दे दी गई। दिन भर चले उपचार के बाद स्वास्थ्य में सुधार तो हुआ किंतु किए परीक्षणों से ज्ञात हुआ कि फेफड़ों में पानी भर गया है एवं ई० सी० जी० भी संतोषजनक नहीं है।

डा० सुनील की देख–रेख में पहले हस्पताल बाद में ५ मार्च तक अपने आवास पर चिकित्सा सुचारू रूप से चलती रही। तत्पश्चात बेटा कुलदीप भक्त जी को स्वास्थ्य लाभ के लिए घर पर विश्राम करने के लिए जालन्धर ले गया। इस बीच २४ मार्च तक डाक्टरों के परामर्शानुसार नियमित दिनचर्या एवं सभी आवश्यक पथ्य पालन का परिणाम उनके स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से अवश्य ही दिखाई दिया। किन्तु शारीरिक दुर्बलता बनी रही एवं आवाज भी लड़खड़ाती रही। इस दौरान स्वास्थ्य सुधार की जानकारी फोन पर लेने वाले श्रद्धेय ठेंगड़ी जी, उदय जी, अवस्थी जी आदि सभी भक्त जी की लड़खड़ाती आवाज को भांपते हुए अपने–२ ढंग से उन्हें पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के बाद ही दिल्ली लौटने का परामर्श देते रहे।

पंजाब प्रवास में २० मार्च को घर पर मिलने गए श्री पांडेय जी को उन्होंने सूरत की प्रस्तावित कार्यसमिति बैठक में पहुंचने के उद्देश्य से २५ मार्च को अपने दिल्ली लौटने की जानकारी भी दे दी। इसी कारण पांडेय जी स्वास्थ्य लाभ तक घर पर ठहरने का अनुरोध भी भक्त जी से नहीं कर पाए। २१ मार्च प्रातः वर्ष प्रतिपदा महोत्सव पर इस तपःपूत ने पूर्ण गणवेश में आद्य सर संघचालक प्रणाम करने के बाद, अंतिम बार ध्वज प्रणाम किया एवं पैदल घर लौट आए। प्राप्त सूचना के अनुसार जगदीश जोशी २५ मार्च को सायं स्टेशन से श्री भक्त जी को पहाड़गंज कार्यालय ले आए। २८ मार्च प्रातः तक सभी प्रकार का उपचार तो चलता रहा किन्तु सुधार न देखते हुए डा० सुनील उन्हें अपने निजी आवास शालीमार बाग ले आए। आवश्यक उपचार केलिए बाद में निकट के एक नर्सिंग होम में रखने के बाद अंत में भक्त जी को सुन्दरलाल जैन हस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा। जैसे–२ जानकारी मिलती रही वैसे–२ दिल्ली में स्थित भा.म.सं. के अधिकारी, भक्त जी के भाई एवं जालंधर से दोनो पुत्रों सहित संबंधी हस्पताल पहुंचते गए एवं मा० ठेंगड़ी जी को भी श्री उदय जी के माध्यम से समय–२ पर इसकी सूचना दी जाती रही। सघन चिकित्सा कक्ष में कृत्रिम–श्वास प्रणाली पर घंटों रख कर भी जीवन रक्षा के सभी प्रयास निष्फल होने पर श्री भक्त जी ने २९–३० मार्च मध्य रात्री १ बजकर ४५ मिनट पर अंतिम श्वास लिया। जीवन मृत्यु के भयावह इस घटनाक्रम में डा० सुनील, जगदीश जोशी एवं रामदास पांडेय की विशेष भूमिका रही। भक्त जी ने वर्षों पूर्व निज देह को शोध कार्यों के लिए 'दधीचि देह दान समिति' को एवं निज नेत्र को 'गुरू नानक नेत्र केंद्र' को दान देने का संकल्प पत्र भर रखा था, तदानुसार श्री भक्त जी का पार्थीव शरीर राम नरेश भवन पहाड़गंज (केंद्र कार्यालय) में रखा गया जहां भा.म.संघ के अतिरिक्त संघ सृष्टि के विभिन्न कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त प्रमुख केंद्रीय श्रम संघों के प्रतिनिधियों एवं श्रम मंत्रलय के अधिकारियों ने श्रद्धा सुमन समर्पित किए। इनमें रा. स्व. संघ के सह सरकार्यवाह मा० मदनदास देवी, वरिष्ठ प्रचारक श्री सोहन सिंह जी भाजपा के महामंत्री श्री प्यारेलाल खंडेलवाल एवं श्रम सचिव श्री पी. डी. शिनाय, दधीचि समिति अध्यक्ष श्री आलोक कुमार (एडवोकेट) मुख्य थे।

उपस्थित जनसमुदाय भारत माता की जय, भक्त जी का देह दान अमर रहे के गगनचुंबी नारे लगाता हुआ दुःखी मन से श्री भक्त जी के पार्थीव शरीर के साथ इम्पीरियल चौराहा तक गया, बाद में समिति वाहन द्वारा दोनो बेटों ने इसे मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज पहुंचा दिया।

A Letter to
A true Maha Karam Yogi

Bhakt Ji,

Sudden death snatched you away leaving us heart broken, we miss you.

Not a moment passes without remembering you Bhakt Ji. It is difficult to carry on without you. You are ever in our thoughts and shall always be remembered.

Bhakt Ji you were a true Karam Yogi. Time may pass by but your memory will never fade. You left us, we miss your serene and lively presence. Your life was perfect blend of high human values. Your presence was pillar of strength for all of us. Your absence gives an indelible vaccum in our life and Heart. No farewell were spoken. Your intense warmth love and affection have given direction to my family. What I am today is because of you we pray where ever you are we need your blessings. May your noble soul rest in peace in heaven Bhakt Ji !

DHARAMPAL NAIK

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
RASHTRIYA SWAYAMSEVAK SANGH

केशव कुंज, झंडेवाला, देशबंधु गुप्त मार्ग, नयी दिल्ली ११००५५ (भारत)

संघे शक्तिः कलौयुगे

Kashav Kunj, Jhandewalan, Deshbandhu Gupta Marg, New Delhi-110055 (Bharat)

दिनांक : अप्रैल ०९, २००४

परमस्नेही श्री अशोक जी व श्री कुलदीप जी भक्त,

सस्नेह नमस्कार

परमश्रद्धेय श्री राज कृष्ण भक्त जी नहीं रहे । सहज़ ही विश्वास नहीं हो रहा । अभी कुछ दिन पूर्व ही उन्हें जस्साराम हस्पताल में मिलना हुआ था । पश्चात् वे स्वस्थ होकर पुनः कार्यालय में कुछ दिन विश्राम करके, जालंधर में स्वास्थ्य लाभ करने के बाद फिर वे दिल्ली कार्यालय लौट आये थे ।

दो दिन बाद अकस्मात स्वास्थ्य बिगड़ने पर सुंदर लाल जैन हस्पताल के आपात्कालीन कक्ष में किये सभी प्रयास असफल होने पर सब प्रकार के प्रयास करने के बावजूद भी भगवान ने उन्हें हम सबसे छीन लिया ।

श्रद्धेय भक्त जी एक कर्मयोगी थे । वे गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी विरक्त साधक थे । मैंने उन्हें बहुत ही निकट से देखा है। वे संघकार्य को ईश्वरीय कार्य के रूप में न केवल देखते थे, अपितु प्रत्यक्ष उनका जीवन ही संघमय था । घर की किसी भी प्रकार की चिंता उन्होंने कभी भी नहीं की । इतना सब होने पर भी आज हम देख रहे हैं कि उनका सारा परिवार किस प्रकार से पल्लवित व पुष्पित होकर समाजोन्मुखी जीवन व्यतीत कर रहा है । उनका अनुज पुत्र श्री कुलदीप भगत जी आज जालंधर में अपना अच्छा व्यवसाय चलाते हुए संघ का दायित्व जिला संघचालक के रूप में निभा रहे हैं ।

श्रद्धेय भक्त जी ने पंजाब में विशेषकर जालंधर के सारे क्षेत्र में संघकार्य को गति प्रदान की है । पश्चात् भारतीय मजदूर संघ के पंजाब का काम भी १९६१-१९६२ में शुरू से ही उनके देखरेख में शुरू होकर आज प्रांत के मजदूरों में क्रमांक एक का श्रम संघ बन गया है ।

हम सब भक्त जी को 'दधीचि ऋषि' ऐसा कभी-कभी पुकारते थे - चरैवति, चरैवति उनके जीवन का ध्येय लक्ष्य अंतिम क्षणों तक रहा ।

उनके स्वर्गवास होने से परिवार और हम सब में एक रिक्तता अवश्य आई है । किंतु उनकी गुणसंपदा और उनके जीवन के आदर्श हम सबके प्रेरणा स्रोत बनकर समाज व राष्ट्र कार्य करने में सदैव हमारा मार्ग दर्शन करते रहेंगे । परम पिता परमात्मा ऐसे श्रेष्ठ महापुरूषों को तो अपने श्री चरणों में स्थान देते ही हैं वे इस विछोह की घड़ी में परिवार तथा हम सभी को भी इस वज्राघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करें, ऐसी प्रार्थना है ।

उस महापुरुष को विनम्र श्रद्धांजलि जिसने अंतिम समय तक दधीचि ऋषितुल्य जीवन तो जिया ही - किन्तु अंत में भी अपना शरीर मानव कल्याणार्थ 'दधीचि देहदान समिति' के माध्यम से शोध कार्य के लिये समर्पित करके हमें नया मार्ग दिखा गये ।

आपका बन्धु,

(अशोक प्रभाकर)

दिल्ली प्रांत प्रचारक

Second only to one in BMS
R. K. Bhakt, who left us recently

- gee pee

Who is the first ? Everyone knows so it is not necessary to name.

I did not come in close contact with Bhaktji for a number of years after joining the BMS. It was only because I was working in Dakshin Bharat and he in Uttar Bharat. National Executive was formed only in 1965 during the foundation of BMS Conference. From then on I came into close, very close contact with him.

Once in a baithak held in Delhi, I spoke forthrightly about workers' right to go on strike. In my opinion employees of Essential Services should not go on strike as that would be harmful to the consumer/public.

After I sat down none rose to comment. Bhaktji got up, opposed my views and said that such views were anti worker. Immediately I felt very bad and angry too. But later on I calmly thought over and convinced myself that every view has a counter view and both have to be taken into consideration before deciding the issue this way or that. I thanked him within myself for giving me new light of wisdom.

From thereon I began respecting him more and more.

Another occasion was the Haryana State BMS Conference. Both of us attended it. But during his speech unfortunately, I had to prepare my speech. I was in the adjoining room. More interested in hearing his speech, than in preparing mine. I listened to him. His voice was full of emotions and clear. I admired him more and more and when we met next, I told him what I felt about his speech.

Many of our Karyakartas may know that he had close contact with Shri P. A. Sangma, then Minister for Labour. He could at any time meet him even without prior permission. I should also at this point reveal that Sangma was a hard smoker. On one such occasion, quietly and calmly Bhaktji told him "Please give up smoking, it will help you to achieve better things. From that moment Sangma gave up smoking.

His argument with the officials or even with Minister was straight and convincing and he rarely came back empty handed.

Many Many years after we decided to have a kitchen where Tea, Meals would be prepared and served for Karyakartas staying there. Somebody raised a question what about cleaning the vessels ? Pat came a suggestion, those who take food should naturally clean their vessels and kitchen boys should do take up the responsibility of other vessels. It was accepted. When Bhaktji informed about this at his home in Jallandhar women folk asked him the same question, when he told about our arrangement they were satisfied and appreciated the way division of labour was worked out, I hope the same is continuing even today.

His last decision that his body should be donated to the Hospital for the better understanding by the medical students of Anatomy of Human body, medical students would. I hope, serve as a model to others too.

वे आदर्शवादियों के प्रेरणास्रोत

अमर नाथ डोगरा
मंत्री भामसं.

'भक्त जी आदर्शवादियों के प्रेरणास्त्रोत थे' यह भावपूर्ण उद्‌गार मा. ठेंगड़ी जी के हैं जो उन्होंने इसी वर्ष ४ अप्रैल को सूरत की राष्ट्रीय संचालन समिति बैठक में स्व. राज कृष्ण भक्त जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए व्यक्त किए । भक्त जी निःसंदेह आदर्शवादियों के प्रेरणा स्त्रोत थे । त्याग, तपस्या और बलिदान के मूर्तिवंत जीवन्त प्रतिमान श्री भक्त जी का जीवन अनंतकाल तक कार्यकर्ताओं की श्रद्धा, प्रेरणा व समर्पण का केन्द्र बिंदु बना रहेगा ।

स्वर्गीय बड़े भाई के निधन पर मा. ठेगड़ी जी के एक लेख की इन पंक्तियों का स्मरण हो रहा है :-

भक्त जी की चमक कभी फीकी नहीं होगी अपितु समय के साथ बढ़ती ही जायेगी ।

गहने गिरवी रखे

प्रारंभिक काल की बात है । जालंधर के समीपस्थ नगर में भक्त जी ने पहली यूनियन का निर्माण किया था । निर्माण के साथ ही प्रबंधक ने युनियन के महामंत्री को सेवामुक्त कर दिया । कुछ दिनों पश्चात् भक्त जी उस कार्यकर्ता के घर गए तो देखा कि वहाँ चुल्हा ठंडा पड़ा है और भुखमरी की अवस्था आ गई है । स्वयं भक्त जी की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी । बैंक में नौकरी करते थे और वेतन का अधिकांश भाग ट्रेड यूनियन गतिविधियों पर खर्च कर देते थे इस कारण धनाभाव बना रहता था । किंतु कार्यकर्ता के परिवार को भूखा तो नहीं देख सकते थे । अतः घर जाकर धर्मपत्नी के आभूषण ले जाकर कार्यकर्ता को दिए कि इन्हें सुनार के पास गिरवी रखो और प्राप्त पैसों से घर में भोजन की व्यवस्था करो ।

आमरण अनशन

पंजाब में भामसं. सम्बद्ध प्रतिरक्षा कर्मचारियों की पहली यूनियन का निर्माण हुआ था । उन दिनों वर्ष १९६८-६९ में सबदूर वामपंथी यूनियनों का बोलबाला था अतः सैन्य अधिकारी उन्हीं की युनियनों का पक्ष पोषण करते थे, सरकार भी उन्हीं के साथ थी । समाज में अपनी यूनियन के लिए समर्थन का अभाव था । युनियन पर चारों ओर से प्रहार होने लगे । लगता था कि युनियन का अस्तित्व यहीं समाप्त हो जाएगा किंतु भक्त जी जो उस समय पंजाब प्रदेश भामसं. के महामंत्री थे के मन में कुछ और ही था । अस्थाई श्रमिकों को स्थाई करने के लिए उन दिनों युनियन आंदोलन चला रही थी और पठानकोट इसका केन्द्र था । माँग पूरी होने की संभावना दूर-दूर तक दिखाई नहीं पड़ती थी । असफल होने का अर्थ था युनियन का बोरिया बिस्तर समेटना । और तभी एक दिन सायंकाल कर्मचारी सभा में भक्त जी ने मांगे पूरी होने तक अकस्मात् अपने आमरण अनशन की घोषणा कर दी । निश्चित दिन भक्त जी आमरण अनशन पर बैठ गये । श्रमिक हित में भक्त जी ने प्राणों की बाज़ी लगा दी है इस कारण युनियन की संख्या प्रभाव व शक्ति में तो वृद्धि होने लगी । किंतु भक्त जी का शारीरिक बल क्षीण होने लगा । दिल्ली में भी चिंता व्याप्त हो गई और अंततोगत्वा मां. ठेंगड़ी जी की तत्कालीन रक्षामंत्री बाबू जगजीवन राम से वार्ता के फलस्वरूप उपवास के दसवें दिन भक्त जी मांगे मनवाने में सफल हुए । परिणाम यह हुआ कि न केवल युनियन का आधार सुदृढ़ हुआ अपितु पंजाब हिमाचल जम्मू कश्मीर व हरियाणा और दिल्ली प्रतिरक्षा विभाग बल्कि संपूर्ण उत्तर क्षेत्र में अनेक नई-२ यूनियनों का गठन भी हो गया ।

केन्द्रीय कार्यालय के प्राण

भक्त जी केन्द्रीय कार्यालय के मानो प्राण ही थे । बीस बाईस वर्ष पूर्व जब पंजाब से उनका केन्द्र दिल्ली कर दिया गया तो केन्द्रीय कार्यालय ही उनका स्थाई निवास बन गया । जालंधर में उनका भरा-पूरा परिवार और अन्य सभी भक्त जी का अत्यंत आदर करते थे किंतु भक्त जी जैसा परिवार से सभी प्रकार के बंधन तोड़ने वाला निर्मोही विरला ही कोई दिखाई देगा । वे अत्यंत आवश्यक होने पर ही कभी कुभार घर जाते थे । उनका सब कुछ संगठन ही था । कार्यकर्ता बन्धु ही उनका परिवार था - राष्ट्र ही उनका आराध्य था ।

कठिन डगर

जिस कठिन डगर पर भक्त जी चले उस डगर को उन्होंने स्वयं अपने हाथों बनाया और लक्ष्य की ओर बढ़ गए । डगर अब पथिक को निहार रही है । देखें इस डगर पर चलने के लिए और कितने पथिक आगे आते हैं ।

उपदेश प्राप्त करने हेतु एक युवक यीशु मसीह के पास पहुँचा । यीशु मसीह ने कहा :

"Leave thy riches, take thy cross and follow me"

(अपना सुख वैभव छोड़ो, सलीब उठाओ और मेरे पीछे आओ)

भक्त जी का हम सभी के लिए यही संदेश है ।

A FATHERLY PRESENCE EXITS

There is a knock at my door at 4.30 a.m. "Venujee please get up, Your tea is ready", a voice tells me. It is Bhaktji calling me early morning with a cup of tea. He likes, and he knows I also like an early morning cup of tea I get up. Wash my mouth and drink that loving cup of tea. On some other day it is the other way. When he is feeling unwell, I wake him up with a cup of tea.

Our is not a mere cup-of-tea relationship. From 1991 onwards when I was asked to set up my headquarters at Delhi BMS Office, Bhaktji has been loving and caring for me. He has guided me to visit the ministers, departmental secretaries and desk officers to get the problems of unions and individual workers from far and wide solved. **Inside his rough exterior there was a soft and kind heart.** He also used to take my help to prepare papers for seminars and also to correct the various memoranda which he was to submit to the government.

The big room to the left of the first floor of the central office was his office-cum-bedroom. It is empty now ! When I was elected working president of BMS in October 1996. Bhaktji requested me to occupy his big room. I refused ! I dared not sit in the chair where that great man was sitting ! That was Bhaktji's room and it will be that for ever, whoever occupies that in future. But none can do even a tenth of the work which he was doing from there inspite of his ailing health.

Despite the softness of his heart, his old militancy (when he was fighting, the days of partition of the country) would come back with all force when he sees any injustice being done to the worker either by the government or the employer ! That has to be seen to be believed !

His honest character does not allow any hypocracy to enter his heart. He is always straight. And so, he spent his last drop of sweat and blood for the cause of the worker, for BMS and for the nation. Let's all try to imbibe his qualities of head and heart in our work and that will be the best tribute to be paid to that great soul.

- R. Venugopal

Keshavbhai Thakkar, Chairman CBWE pays his homage to beloved leader he respected

World is fast advancing. Man has lost values. Words lost meanings and yet I knew an old man passed eighty, Bones and skin left and inspite of that he had values and his words carried the meaning. He was a man of action. Yes ! because he was devoted and dedicated to the cause of countrymen. Generally up at 3.30 or 4.00 am, will go to kitchenette, prepare tea and then may read , write and or rest. Reading communique and religious scriptures, writing replies and presentations.

He was a self evasive karmaveer. People knew him as Raj Krishan Bhakt, very few knew he was from Pranami creed. He breathed his last on 29-30/03/04 but before that he donated his mortals for researchers to serve humanity. He happened to be General Secretary, President and even residential secretary of BMS. All who came in his contact will miss his services but seldom forget the fragrance of his affectionate fatherly love received.

अपने परिवार में मेरी पत्नि को आश्रय देकर भक्त जी ने मेरे २-वर्षीय प्रचारक काल को पूर्ण करवाया

ठाकुर बलवंत सिंह जलंधर विभाग संघचालक

५० वर्ष पूर्व १९५३–५४ में मेरा सम्पर्क जालंधर छावनी में श्रद्धेय भक्त जी से हुआ। मैं उस समय २३/२४ वर्ष की आयु का था। भक्त जी बैंक सेवा के बाद का अपना शेष समय प्रतिदिन संघ कार्य में ही लगाते थे। मैं अधिक समय उनके साथ ही घुमता था। पांच बच्चे दो छोटे भाईयों को मिलाकर '६' सदस्यों का परिवार चलाते हुए भी संघकार्य उनके जीवन का प्रमुख कार्य था। मुझे संघ कार्य का पाठ उन्होंने ही पढ़ाया। उन दिनों मेरे विवाह की चर्चा चल रही थी। सगाई हो चुकी थी। मैं जालंधर छावनी के निकट स्कूल में विज्ञान विषय का अध्यापक था। प्रसंग से संघ अधिकारियों ने मेरे सामने २ वर्ष के लिए प्रचारक निकलने का प्रस्ताव रखा । नौकरी छोड़कर प्रचारक निकलना सरल नहीं था। भक्त जी से विचार विमर्श के पश्चात तय हुआ कि विवाह निश्चित समय पर हो जाए और प्रचारक कार्य भी दो वर्ष का पूरा किया जाए। अतः मैं प्रचारक निकल गया। एक वर्ष के पश्चात विवाह हो गया, विवाह के पश्चात भी एक वर्ष प्रचारक रहा तभी तो २ वर्ष प्रचारक कार्य मे पूरे होते थे। मेरी नवविवहिता पत्नि भक्त जी के परिवार में ही साल भर के लिए रही। पहले ही उनके परिवार में ६ सदस्य थे अब एक अधिक हो गय, १० सदस्य हो गये । २ वर्ष की प्रचारक अवधि समाप्त होने के बाद मैं घर लौटा। भक्त जी का जीवन बहुत निकट से देखा और मैं प्रभावित हुआ। ५० वर्ष पूर्व से ही उनका जीवन व्यक्तिगत नहीं रहा था, वह समष्टि में विलीन हो चुका था। अन्यथा मेरे जीवन में संघ कार्य प्रचारक के रूप में संभव नहीं होता। ५० वर्षो में भक्त जी के उपर संघ कार्य और मजदूर संघ की भिन्न–२ जिम्मेदारियाँ रहीं। उनका जीवन महान से महानतम ही होता गया। अपने शरीर का संस्कार भी उन्होंने नहीं होने दिया। शरीर का कण कण भी समाज के काम आवे ऐसा उनका संकल्प था।

उपरोक्त तथ्य इस बात का प्रमाण हैं कि भक्त जी की जीवन सरिता का प्रवाह निरंतर गति से अनेक प्रकार की बाधाओं को चीरता हुआ सदैव के लिए अनंत सागर में विलीन हो गया ।

यहां यदि मैं एक पंक्ति उस साधारण दिखने वाले महिला अर्थात भक्त जी की धर्म पत्नि श्रीमिति श्यामा बाई भक्त के विषय में नहीं लिखता तो उनके प्रति अन्याय होगा। क्योंकि उनके तप त्याग एवं सहयोग से ही भक्त जी साधारण जीवन से उपर उठकर इतना कुछ महान कर पाये।

कवि की ये पंक्तियां उनके जीवन को सार्थक करती हैं –

पड़ा रहेगा देह कही अग्नि संस्कार भी होगा नहीं, अरे यह तो पुरस्कार है मातृ प्रेम का तथाकथित्

भक्त जी के प्रेरणा स्त्रोत

–*मदन लाल विरमानी* (हिन्दु व आकाशवाणी के पूर्व संपादक)

अपनी सम्पूर्ण शक्ति–बुद्विको राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्देशानुसार मज़दूर क्षेत्र को अर्पित कर देने में ही अपने जीवन को धन्य मानने वाले श्री राजकृष्ण भक्त अनेक गुणों की खान थे। उनके ऐसे गुणों का प्रेरक तथा उनके जीवन को सतत सक्रियता से भर देने वाला उनका एक बड़ा गुण था कर्तव्य कठोरता। एक बार जीवन का लक्ष्य समाज सेवा के रूप में तय कर लेने के बाद वे कठोरतापूर्वक इस व्रत का निर्वहन करते रहे। इसी कर्मकठोरता के आधार पर ही वे भारतीय मजदूर संघ के अ. भा. अध्यक्ष आदि की विभिन्न जिम्मेदारियों को निभाने में समर्थ हो सके।

जहां तक मेरी जानकारी है, उनके जीवन के तीन अक्षय प्रेरणा स्रोत रहे। हिन्दू कुलभूषण महाराजा छत्रसाल के गुरूवर तथा प्रणामी मत के संस्थापक महान् सद्गुरू पूज्य श्री प्राणनाथ जी के पावन उपदेश उनके प्रथम प्रेरणा स्रोत थे। भक्त जी ने मुझे बताया था कि सद्गुरु प्राणनाथ जी की गद्दी पर विराजमान महाराज जी की स्वीकृति प्राप्त करने के उपरांत ही उन्होंने समाज संगठन के कार्य के प्रति अपने आपको समर्पित किया है।

अपने दूसरे मार्गदर्शक के रूप में उन्होंने माना था संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूज्य श्री गुरू जी (पूजनीय माधव राव सदाशिव राव गोलवलकर) को। वे एक संस्मरण बड़े श्रद्धाभाव से सुनाया करते थे। एक संघ शिविर में दोपहर बाद की बैठकों का आयोजन था। पंजाब के स्वयंसेवकों की एक बैठक प्रजा परिषद के वयोवृद्ध नेता तथा जम्मू कश्मीर के संघचालक पं० प्रेम नाथ डोगरा लेने वाले थे। बैठक के दौरान वे स्वयंसेवकों से बातचीत करते हुए बीच बीच में हुक्का भी गुड़–गुड़ा लेते थे। भक्त जी को भी अन्य स्वयंसेवकों की भांति बैठक में जाना था। गए, किन्तु पंडित जी को अंदर हुक्का गुड़गुड़ाते देख, बाहर ही अनमने भाव से खड़े हो गए। मन में था, यह हुक्का गुड़गुड़ाने वाला व्यक्ति मेरा क्या मार्गदर्शन करेगा?भक्त जी आगे बढ़ गए। दूसरी ओर श्री गुरू जी बैठक ले रहे थे। भक्त जी पंडाल के बाहर जाकर खड़े हुए ही थे कि श्री गुरू जी ने उन्हें बुला लिया, ''चले आओ, यहां हुक्का–बुक्का कुछ नहीं है,'' यह सुनते ही भक्त जी आश्चर्यचकित रह गए।

''गुरूजी ने मेरे मन की बात कैसे पढ़ ली क्या वे सचमुच अंतर्यामी हैं, सर्वज्ञ हैं। ऐसे भाव भक्त जी के मन में उभरे और बस उसके बाद वे श्री गुरूजी के अनन्य पुजारी बन गए। मानो उन्हें जीवन उद्धारक मिल गया। श्री गुरुजी का एक एक शब्द उनका पथ प्रदर्शक बन गया। वे अक्षरशः श्री गुरूजी के हो गए।''

अपने तीसरे मार्गदर्शक के रूप में वे भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक माननीय दत्तोपंत जी ठेंगड़ी का नाम लिया करते थे। ''उन्होंने मज़दूर संघ को तात्विक आधार प्रदान किया है, पूंजीवाद व साम्यवाद के मुकाबले में भारतीय चिंतन को उजागर किया है। वे भारत के मज़दूरों के नेताओं का ही नहीं बल्कि विश्व भर के मज़दूरों के नेताओं का मार्गदर्शन करने में अत्यंत समर्थ हैं। उनकी कार्य शैली और सद्व्यवहार अद्वितीय है, ऐसी उनकी आस्था थी।

इस प्रकार ऐसे देदीप्यमान् प्रकाश स्तम्भों के मार्गदर्शन के साथ उनकी अपनी कर्तव्य कठोरता ने मिलकर भगत जी की आदर्शोन्मुखी साधना को चार चांद लगा दिए। वे यश के पीछे नहीं भागे, यश स्वयं उन्हें खोजता रहा। उस महान् कर्मवीर को शत् शत् प्रणाम्!

भूखे मज़दूरों के लिए पत्नि ने भी आभूषण दिए

– विश्वनाथ, अखिल भारतीय धर्म जागरण प्रमुख

जालंधर विभाग संघचालक मा० ठाकुर बलवंत सिंह जी, जालंधर जिला संघ चालक मा० राजपाल जी कोछड़ तथा श्रद्धेय राजकृष्ण जी भक्त के घनिष्ठ पारिवारिक संबंध रहे हैं। श्री कोछड़जी के विवाह की पचासवीं वर्षगांठ के अवसर पर भक्त जी के देहावसान से एक दिन पूर्व उनके बहनजी ने ठाकुर जी को मिलने पर पूछा कि भक्त जी आजकल कहां हैं, उन्हें मैंने अनेक वर्षो से नहीं देखा, उन्होंने अपने घर की ओर कभी ध्यान नहीं दिया, मैं उनसे लड़ना चाहती हूं। ठाकुर जी बोले–ऐसा क्यों इस पर बहनजी कहने लगीं कि उन्होंने अपने परिवार, विशेषतः अपनी पत्नि पर बड़े अत्याचार किए हैं। वे दस–२ बारह–२ लोगों को भोजन करवाने व उनके जूठे बर्तनों की सफाई में ही लगी रहती थीं। ठाकुर जी ने यह सुनकर उत्तर दिया कि वे तो आपके पास दिल्ली में ही रहते हैं, उनसे मिलकर आप अवश्य लड़िएगा।

एक उद्योग फैक्टरी में लंबे समय तक हड़ताल चलने के फलस्वरूप वहां मजदूरों के परिवारों की आर्थिक कठिनाई के कारण भूखों मरने की स्थिति आ गई थी। अपने घर में श्री राजकृष्ण जी भक्त अन्य कार्यकर्ताओं के साथ इस समस्या के निदान की चर्चा कर रहे थे। उनकी पत्नि ने जब यह सुना तो वे सोने के हार सहित अपने आभूषण ला कर कहने लगीं कि आप जैसा चाहें इनका उपयोग करें परंतु मजदूरों के परिवारों की यो य व्यवस्था अवश्य करें।

श्री भक्त जी बैंक की नौकरी में थे। भारतीय मजदूर संघ की योजना थी कि वे जालंधर में रहते हुए ही संगठन का कार्य करें, इसीलिए उन्होंने पदोन्नति के अनेक प्रस्ताव ठुकरा दिए। जब कोई कार्यकर्ता किसी कार्य को लेकर उनसे मिलने जाता तो वे कहते थे कि आप पत्र अथवा दूरभाष द्वारा इस संबंध में सूचित कर देते तो भी यो य प्रयत्न किया जाता। आपके आने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

अस्वस्थता की स्थिति में चिकित्सालय में जब मैं उनसे मिलने गया तो वे कहने लगे कि आप तो स्वयं ही अस्वस्थ रहते हैं, आपने यह कष्ट क्यों किया मृत्यु के उपरांत भी मेरा शरीर सामाजिक काम आवे इस हेतु उन्होंने अपने नेत्र दान एवं देह दान के लिए अपने परिवार को तैयार किया एवं तदानुसार उनके नेत्र एवं देह को संबंधित चिकित्सा अधिकारियों को समर्पित कर दिया गया।

ऐसे नव दधीचि समर्पित कार्यकर्ता को शत् –२ नमन

स्व. राज कृष्ण भक्त जी के जीवन के कुछ संस्मरण

स्व. राज कृष्ण भक्त जी का जन्म और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश मिंट गुमरी पश्चिमी पाकिस्तान में हुआ था । हम दोनों स्वयंसेवक एवं घनिष्ट मित्र थे । वे छुटपन से ही उदार हृदयी थे एवं आवश्यकतानुसार सहायता करने के लिये सदैव तत्पर रहते थे ।

भारत विभाजन के बाद जालंधर पहुंचने पर बैंक सेवा में रहते भक्त जी ने श्रमिकों की सेवा के लिये रात-दिन एक किया एवं मजदूर संघ के विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर रहकर दायित्वों का स लतापूर्वक निर्वहन किया । छोटे-बेटे श्री कुलदीप से ात हुआ कि १०-वर्ष पूर्व जब मृत्यु पश्चात् देह-दान के संकल्प की जानकारी परिवार में मिली तो सभी ने विरोध किया । किंतु ृढ निश्चयी भक्त जी ने धीरे-२ परिवार में सभी की सहमती ले ही ली ।

इस नव दधीची को मेरा शत्-शत् नमन !

बलबीर शर्मा
प्रचारक एवं जालंधर सह विभाग कार्यवाह

स्व० भक्त जी द्वारा रोपा बीज, आज वट वृक्ष बन गया

- कु. सुचित्रा महापात्र, महामंत्री, आंगनवाड़ी महासंघ

वर्ष १९९२ हरि राव उड़िसा की -आंगनवाड़ी बहनों द्वारा आंगनवाड़ी महासंघ एवं मुझे महामंत्री का दायित्व सौंपा गया था । घर लौटने से पूर्व हम दोनों भक्त जी को मिलने गयी, तो उन्होंने हमें बैठाकर कहा कि यदि इस महासंघ को शशक्त बनाना है तो विवाह का विचार आपको ५-वर्ष बाद ही करना होगा ।

मैंने अन-जाने में जो कहा भक्त जी ने टूटी- ूटी भाषा में ही क्यों न हो मुझे पुनः दोहराने का आग्रह किया । मैं कहने में संकोच कर रही थी, उन्होंने मुझे ढाढस बंधाते हुए कहा कि 'तुम्हारे से ऐसी ही दृढ़ता की अपेक्षा थी, जाओ काम पर लग जाओ, संगठन धीरे-२ सबल बनता जाएगा ।' तभी से काम में लगी हूं । भक्त जी द्वारा बोया बीज आज वट वृक्ष बन कर असहायों की आश्रय स्थली बना हुआ है ।

Postal Regn. No. DL-11430/03-05 (To be Posted on 4&5 May 2004) RN.55626/92

चंडीगढ़ वीरवार 26 सितंबर, 2002

Printed and Published by Uday Patwardhan and Edited by Prem Nath Sharma for Bharatiya Mazdoor Sangh, Ram Naresh Bhavan, 2426/27, Tilak Gali, Pahar Ganj, New Delhi-110055 Ph.: 23584212, 23562654, Fax ; 91-11-23582648 & Printed at Jupiter Printers, 139-B, East Moti Bagh, Sarai Rohilla, Delhi-110007 Mobile : 9868244372